महिलाओं की भूमिका निर्वहन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

* डॉ. वन्दना,

''नारी की सामाजिक प्रस्थिति और समस्याओं के अनेक स्वरूप है जिनका सामान्यीकरण असम्भव है क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में नगरों एवं ग्रामीण क्षत्रों में, विभिन्न वर्गो में, विभिन्न प्रस्थिति और उससे जनित समस्यायें बहुत भिन्नतायें रखती हैं ।''

महिलाओं द्वारा घर और बाहर के कार्यों का निर्वहन महिलाओं की प्रस्थिति में आने वाले व्यापक परिवर्तन से जनित हैं । शिक्षा एवं विकास ने महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक , राजनीतिक आदि अनेक क्षेत्रों में पहले से ज्यादा सशक्त बनाया है इसमें कोई संदेह नहीं है किन्तु आधी आवादी के हिसाब से यह ऊँट के मुँह में जीरा जैसी उक्ति को चरितार्थ कर रहा है । आधुनिक युग में महिलाओं ने अध्यापिका, डॉक्टर, नर्स, ब्यूटीशियन, इंजीनियर जैसे व्यवसायों से अलग हटकर ऐसे व्यवसायों को अपनाया है जिस पर पुरुष का एकाधिकार था । नई–नई प्रोद्योगिकी के फलस्परूप महिलाओं की प्रस्थिति एवं सम्मान में बढ़ोत्तरी हुई है । इसे हम नकार नहीं सकते क्योंकि नये नये आविष्कारों ने कुछ महिलाओं को पुरुष पर पूर्णतः आश्रित न होकर उन्हें नये आधार भी प्रदान किये हैं। लड़कियाँ, स्कूलों , कालेजों, ऑफिस आदि में खुद गाड़ी चलाकर बाहर निकलने लगी हैं किन्तु एक निश्चित समय सीमा के अन्तर्गत ही । यह भी सोचने का प्रश्न है क्योंकि समाज के निर्माण का केन्द्र बिन्दु परिवार है और हम ऐसे परिवार, समाज को निर्मित कर रहे हैं जहॉ महिला पूर्णतः सुरक्षित नहीं है ।

भारतीय सन्दर्भ में नारी की प्रस्थिति एवं भूमिका का निर्धारण जाति, वर्ग,सेक्स, क्षेत्र के आधार पर दिखाई देता है । पारिवारिक दायित्व, बच्चों को पैदा करने, देखभाल करने, घर की साफ–सफाई, खाना बनाने, घर के अन्य लोगों जिसमें विशेषकर वृद्धों की सेवा जैसे कार्य आज भी महिलाओं के

* समाजशास्त्र विभाग, बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कालेज, लखनऊ

लिए निर्धारित है। नातेदारी, विवाह आदि का स्थायित्व एवं निरन्तरता महिला के दृष्टिकोण एवं कार्यो पर ही अवलम्बित है । 'महिला के लिए यह कोई खास महत्व नहीं रखता कि आप बाहरी कार्य क्षेत्र में कितने बड़े पद पर हैं बल्कि भारतीय सन्दर्भ में घरेलू कार्य का मैनेजर तो एक निश्चित समय पर लौट कर घर का सारा कार्य भी करेगा' वर्तमान समय में महिलाओं की प्रस्थिति में सकारात्मक, नकारात्मक दोनो प्रकार के स्वरूप सामने आये हैं, जाति, वर्ग, लिंग आदि के आधार पर महिला विभेद और समस्या अलग अलग तरह की है ।

भारतीय महिला परिवार की कीमत पर स्वतन्त्रता व शक्ति प्राप्ति की इच्छुक नहीं है इसी कारण से स्त्रियाँ शिक्षा, व्यवसाय के द्वारा ज्ञान, सूचना, जागरूकता,आर्थिक आधारों को प्राप्त कर लेने के बावजूद भी पारिवारिक जीवन के भावनात्मक सम्बन्धात्मक परिधियों में जकड़ी नजर आती हैं, इन बेड़ियों से उन्हें मुक्ति नहीं मिली है, यही कारण है कि गृहस्थ जीवन के सारे कार्यों को करते हुए भारतीय महिला ने घर के बाहरी कार्यो को अपनाया है जिससे उनकी भूमिकाओं में बढ़ोत्तरी हो गयी है अर्थात् उनके सामने दोहरी भूमिका निर्वहन की समस्या उत्पन्न हो गयी है और यह भूमिका निर्वहन उसे आर्थिक रूप से सशक्त बनाता नजर आता है किन्तु शारीरिक, मानसिक कष्ट की कुछ मात्रा के साथ । 'महिला सशक्तीकरण के सूचकांक पर यदि नजर डालें तो महिलाओं के कार्यभार में कमी का आना, सशक्तीकरण का लक्षण है किन्तु दोहरी भूमिका की वजह से कार्य का बढ़ जाना स्वाभाविक है जिसमें भारतीय पितृसत्तात्मक व्यवस्था असहयोग करती नजर आती है ।

डॉ. राम आहूजा द्वारा किये गये सर्वेक्षण में 10 प्रतिशत से अधिक स्त्रियाँ ऐसी नहीं हैं जिन्हें अपने द्वारा उपार्जित आय का उपयोग करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हो , 0.5 प्रतिशत स्त्रियाँ ऐसी मिलीं जिन्होने अपने भाइयों के समान पिता की सम्पत्ति में हिस्सा लिया हो।

जो स्त्रियाँ घर के साथ–साथ बाहरी कार्यों में सन्लग्न हैं उन्हें

दोहरी भूमिका का निर्वहन करना पड़ रहा है । इस सन्दर्भ में दीपा माथुर ने अपने अध्ययन में पाया कि 53 प्रतिशत महिलायें अपनी दोहरी भूमिका से उच्च सन्तुष्ट, 18 प्रतिशत मध्यम सन्तुष्ट व 29 प्रतिशत असन्तुष्ट पाई गयीं।

दोहरी भूमिकाओं के साथ सन्तोष, असन्तोष , कामकाजी महिलाओं के आत्म प्रतिबिम्ब और स्वयं के विषय में की गयी कल्पना को प्रभावित करती है । दोहरी भूमिका के कारण महिलाओं के सामने भूमिका संघर्ष जैसी स्थिति उनके सामने अनेक समस्या भी पैदा कर रही है । काम करने के प्रेरणात्मक स्तर, पत्नी के रोजगार के प्रति पति का दृष्टिकोण, कार्य स्थान का वातावरण, महिलाओं के व्यक्तित्व का प्रकार, आदि महिलाओं को भूमिका निर्वहन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं । दीपा माथुर ने अपने अध्ययन में पाया कि 21.8 प्रतिशत स्त्रियाँ उच्च कोटि की भूमिका से संघर्ष की स्थिति में थीं, 44.4 प्रतिशत निम्न कोटि के तथा 33.8 प्रतिशत किसी भी प्रकार की भूमिका से संघर्ष की स्थिति में नहीं थीं।

महिलायें घर और बाहरी कार्यो से सम्बन्धित भूमिकाओं को पूरा करने में यह अनुभव करती हैं कि वह अपने व्यावसायिक आकांक्षाओं को कम करें या फिर गृह दायित्व को । इन दोनों पैरामीटर पर अधिकतर कम करती हैं यही कारण है कि उच्च पदों पर महिलाओं की संख्या बहुत कम दिखाई देती है । घर के बाहरी कार्यो में कुछ कार्य ऐसे भी हैं, जहाँ उनकी सुरक्षा, समाज की मानसिकता का खतरा बना रहता है जैसे यात्रा सम्बन्धी कार्य से सम्बन्धित व्यवसाय। जो महिलायें बाहरी कार्यो को करने के लिए आती हैं उनके कार्य की प्रकृति पुरुषों के समान होने के बावजूद भी वेतन या मजदूरी कम दिया जाता है क्योंकि इस बाहरी कार्य को उनके गौण कार्य में सम्मिलित किया जाता है।

भारतीय समाज औरतों को बाहरी कार्य करने की अनुमति देता नजर आ रहा है किन्तु पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनायें, एवं संस्थायें उन मूल्य व्यवस्थाओं एवं सांस्कृतिक नियमों द्वारा सुदृढ़ होती हैं जो कहीं न कहीं स्त्रियों की हीन भावना की धारणा को प्रचारित करती हैं । समाज में व्याप्त वे

मान्यतायें, प्रवृत्तियाँ जिसमें स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में निम्न होने, साधन एवं लक्ष्य तक पहुँचने से रोकने, तथा निर्णय लेने वाले पदों में सहभागिता को सीमित करने जैसी परिस्थितियाँ प्रमुख हैं ।

समाज की मानसिकता, समाजीरण के अभिकरण जिसमें खासकर परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है बच्चों के समाजीकरण में महिलाओं द्वारा ही लड़का एवं लड़की में विभेद आज भी है । हम बच्चों का समाजीकरण जाति, वर्ग, लिंग, क्षेत्र आदि के आधार पर करते हैं जबकि आज के समय की मांग कुछ और ही है हम बच्चे का समाजीकरण एक अच्छे इंसान के रूप में करें । भारतीय समाज आज भी घरेलू कार्य की इजाजत पुरुषों को कम देता है जबकि बदलती परिस्थितियों में जरूरत है दोनो को मिलकर काम करने की जिसकी शुरुवात कम मात्रा में ही सही पर हो चुकी है , जरूरत है इसे बढ़ावा देने की । भारतीय समाज में नारी के सन्दर्भ में प्रतिमानों, मूल्यों का एक विशेष स्वरूप समाज में पाया जाता है जैसे विवाह के समय आज भी महिला के लिए गोरा रंग, सौन्दर्य, स्वभाव के गुण ज्यादा महत्वपूर्ण हैं जबकि पुरुषों के लिए शिक्षा, व्यवसाय की प्रकृति आज भी महत्वपूर्ण बनी हुई है इसे भी बदलने की आवश्यकता है ।

स्वस्थ नारीवाद के परिपेक्ष्य में यदि हम देखें तो नारी के दोहरे निर्माण के सन्दर्भ में मानवीयता आवश्यक है । पुरुष एवं बच्चों के प्रति प्रतिशोध व प्रतिकार की भावना के स्थान पर समता, सहयोग, पुरुष की मानसिकता, खुद महिला की मानसिकता, समाज के मानदण्डों संस्थाओं में बदलाव या विकल्प ढूँढ़ने की जरूरत है जिसमें पुरुष को जोड़ते हुए ही न्यायपूर्ण स्वस्थ समाज की स्थापना हो सकेगी । महिलाओं एवं पुरुषों की परम्परागत भूमिकाओं की पुनः परिभाषा व उन शक्तियों एवं स्थितियों को समाप्त करना है जिससे समानता के अवसर कम होते हों ।

सन्दर्भ –

1. निवास, एम0एन0, द चेंजिंग पोजीशन आफ इण्डियन वूमन पृष्ठ–7
2. आहूजा, राम, सामाजिक समस्यायें, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर

1999

3. माथुर दीपा, वूमन एण्ड वर्क, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, 1992
4. आहूजा, राम, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1999
5. परिप्रेक्ष्य, शैक्षिक योग्यता और प्रशासन का सामाजिक,आर्थिक सन्दर्भ अंक–1 अप्रैल, 2007
6. www.naaree.com/working.